शब्द–ब्रह्म

प्रवेशांक **ISSN 2320 – 0871**

भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

17 नवंबर 2012

सम्पादकीय

मातृभाषा और विचार की शक्ति

"महात्मा गांधी का स्पष्ट मत था कि जब तक हमारी मातृभाषा में हमारे सारे विचार प्रकट करने की शक्ति नहीं आ जाती और जब तक वैज्ञानिक विषय मातृभाषा में नहीं समझाये जा सकते, तब तक राष्ट्र को नया ज्ञान नहीं मिल सकेगा। जो शिक्षा विचार करना नहीं सिखाती वह सही अर्थों में व्यर्थ है। हमारे स्नातक अधिकतर निकम्मे, कमजोर, निरुत्साही, रोगी और कोरे नकलची बन जाते हैं। उनमें खोज करने की शक्ति, विचार करने की शक्ति, साहस, धीरज, वीरता, निर्भयता और अन्य गुण बहुत कुछ क्षीण हो जाते हैं। उसमें हम नयी योजनाएं नहीं बना पाते और यदि बनाते हैं तो उन्हें पूरा नहीं कर पाते।" भारत में कभी भी वैचारिक शून्यता की स्थिति नहीं रही। प्राचीनकाल में इस देश की मातृभाषा और राष्ट्रभाषा संस्कृत थी। संस्कृत भाषा में हमने ऊंची से ऊंची उड़ान भरी और ब्रह्म विद्या जैसी ज्ञान चर्चा की। दक्षिण के संतों ने अपने तत्वज्ञान की स्थापना संस्कृत भाषा में की, यद्यपि उनकी मातृभाषा भिन्न थी। कालांतर में आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का विस्तार होता चला गया। उन भाषाओं के मूल में संस्कृत भाषा ही है। आज विज्ञान और तकनीक के युग में भाषा के बंधन ढीले हुए हैं। हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाएं विज्ञान और तकनीक से लोहा लेने में समर्थ हैं। एक ओर तो इसके पीछे बाजार की शक्तियां काम कर रही हैं, दूसरे इसमें वे लोग अपना निःस्वार्थ योगदान दे रहे हैं जो इस देश से अत्यधिक प्रेम करते हैं। उसीमें अपना हविर्भाग देने की अभिलाषा से यह प्रयास किया जा रहा है, जो आप सभी के सहयोग से सफलता प्राप्त करेगा।

भारतीय भाषाओं में अतंर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका शब्द-ब्रह्म का पहला अंक आपकी आंखों के सामने है। यह भारत के पुष्टिकारक और दिलों को जोड़ने वाले विचारों को दुनिया तक ले जाएगा, इसी आशा और विश्वास के साथ। सभी को दीपावली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं।

- डॉ पुष्पेंद्र दुबे